मुहाजिरनामा / मुनव्वर राना

1947 के भारत पाकिस्तान बटवारे के मुहाजिरों पर लिखी गयी यह एक बहुत लम्बी ग़ज़ल हैं जिसमे कि 504 शेर हैं। अपनी ज़मीन, अपना घर, अपने लोगो को छोड़ने का ग़म क्या होता हैं इसको इस ग़ज़ल में बड़ी शिद्दत से व्यक्त किया गया हैं। ग़ज़ल के चंद शेर पेश हैं...!!

मुहाजिर हैं मगर हम एक दुनिया छोड़ आए हैं,
तुम्हारे पास जितना है हम उतना छोड़ आए हैं ।

कहानी का ये हिस्सा आज तक सब से छुपाया है,
कि हम मिट्टी की ख़ातिर अपना सोना छोड़ आए हैं ।

नई दुनिया बसा लेने की इक कमज़ोर चाहत में,
पुराने घर की दहलीज़ों को सूना छोड़ आए हैं ।

अक़ीदत से कलाई पर जो इक बच्ची ने बाँधी थी,
वो राखी छोड़ आए हैं वो रिश्ता छोड़ आए हैं ।

किसी की आरज़ू के पाँवों में ज़ंजीर डाली थी,
किसी की ऊन की तीली में फंदा छोड़ आए हैं ।

पकाकर रोटियाँ रखती थी माँ जिसमें सलीक़े से,
निकलते वक़्त वो रोटी की डलिया छोड़ आए हैं ।

जो इक पतली सड़क उन्नाव से मोहान जाती है,
वहीं हसरत के ख़्वाबों को भटकता छोड़ आए हैं ।

यक़ीं आता नहीं, लगता है कच्ची नींद में शायद,
हम अपना घर गली अपना मोहल्ला छोड़ आए हैं ।

हमारे लौट आने की दुआएँ करता रहता है,
हम अपनी छत पे जो चिड़ियों का जत्था छोड़ आए हैं ।

हमें हिजरत की इस अन्धी गुफ़ा में याद आता है,
अजन्ता छोड़ आए हैं एलोरा छोड़ आए हैं ।

सभी त्योहार मिलजुल कर मनाते थे वहाँ जब थे,
दिवाली छोड़ आए हैं दशहरा छोड़ आए हैं ।

हमें सूरज की किरनें इस लिए तक़लीफ़ देती हैं,
अवध की शाम काशी का सवेरा छोड़ आए हैं ।

गले मिलती हुई नदियाँ गले मिलते हुए मज़हब,
इलाहाबाद में कैसा नज़ारा छोड़ आए हैं ।

हम अपने साथ तस्वीरें तो ले आए हैं शादी की,
किसी शायर ने लिक्खा था जो सेहरा छोड़ आए हैं ।

कई आँखें अभी तक ये शिकायत करती रहती हैं,
के हम बहते हुए काजल का दरिया छोड़ आए हैं ।

शकर इस जिस्म से खिलवाड़ करना कैसे छोड़ेगी,
के हम जामुन के पेड़ों को अकेला छोड़ आए हैं ।

वो बरगद जिसके पेड़ों से महक आती थी फूलों की,
उसी बरगद में एक हरियल का जोड़ा छोड़ आए हैं ।

अभी तक बारिसों में भीगते ही याद आता है,
के छप्पर के नीचे अपना छाता छोड़ आए हैं ।

भतीजी अब सलीके से दुपट्टा ओढ़ती होगी,
वही झूले में हम जिसको हुमड़ता छोड़ आए हैं ।

ये हिजरत तो नहीं थी बुजदिली शायद हमारी थी,
के हम बिस्तर में एक हड्डी का ढाचा छोड़ आए हैं ।

हमारी अहलिया तो आ गयी माँ छुट गए आखिर,
के हम पीतल उठा लाये हैं सोना छोड़ आए हैं ।

महीनो तक तो अम्मी ख्वाब में भी बुदबुदाती थीं,
सुखाने के लिए छत पर पुदीना छोड़ आए हैं ।

वजारत भी हमारे वास्ते कम मर्तबा होगी,
हम अपनी माँ के हाथों में निवाला छोड़ आए हैं ।

यहाँ आते हुए हर कीमती सामान ले आए,
मगर इकबाल का लिखा तराना छोड़ आए हैं ।

हिमालय से निकलती हर नदी आवाज़ देती थी,
मियां आओ वजू कर लो ये जुमला छोड़ आए हैं ।

वजू करने को जब भी बैठते हैं याद आता है,
के हम जल्दी में जमुना का किनारा छोड़ आए हैं ।

उतार आये मुरव्वत और रवादारी का हर चोला,
जो एक साधू ने पहनाई थी माला छोड़ आए हैं ।

जनाबे मीर का दीवान तो हम साथ ले आये,
मगर हम मीर के माथे का कश्का छोड़ आए हैं ।

उधर का कोई मिल जाए इधर तो हम यही पूछें,
हम आँखे छोड़ आये हैं के चश्मा छोड़ आए हैं ।

हमारी रिश्तेदारी तो नहीं थी हाँ ताल्लुक था,
जो लक्ष्मी छोड़ आये हैं जो दुर्गा छोड़ आए हैं ।

गले मिलती हुई नदियाँ गले मिलते हुए मज़हब,
इलाहाबाद में कैसा नाज़ारा छोड़ आए हैं ।

कल एक अमरुद वाले से ये कहना गया हमको,
जहां से आये हैं हम इसकी बगिया छोड़ आए हैं ।

वो हैरत से हमे तकता रहा कुछ देर फिर बोला,
वो संगम का इलाका छुट गया या छोड़ आए हैं।

अभी हम सोच में गुम थे के उससे क्या कहा जाए,
हमारे आंसुओं ने राज खोला छोड़ आए हैं ।

मुहर्रम में हमारा लखनऊ ईरान लगता था,
मदद मौला हुसैनाबाद रोता छोड़ आए हैं ।

जो एक पतली सड़क उन्नाव से मोहान जाती है,
वहीँ हसरत के ख्वाबों को भटकता छोड़ आए हैं ।

महल से दूर बरगद के तलए मवान के खातिर,
थके हारे हुए गौतम को बैठा छोड़ आए हैं ।

तसल्ली को कोई कागज़ भी चिपका नहीं पाए,
चरागे दिल का शीशा यूँ ही चटखा छोड़ आए हैं ।

सड़क भी शेरशाही आ गयी तकसीम के जद मैं,
तुझे करके हिन्दुस्तान छोटा छोड़ आए हैं ।

हसीं आती है अपनी अदाकारी पर खुद हमको,
बने फिरते हैं युसूफ और जुलेखा छोड़ आए हैं ।

गुजरते वक़्त बाज़ारों में अब भी याद आता है,
किसी को उसके कमरे में संवरता छोड़ आए हैं ।

हमारा रास्ता तकते हुए पथरा गयी होंगी,
वो आँखे जिनको हम खिड़की पे रखा छोड़ आए हैं ।

तू हमसे चाँद इतनी बेरुखी से बात करता है
हम अपनी झील में एक चाँद उतरा छोड़ आए हैं ।

ये दो कमरों का घर और ये सुलगती जिंदगी अपनी,
वहां इतना बड़ा नौकर का कमरा छोड़ आए हैं ।

हमे मरने से पहले सबको ये ताकीत करना है ,
किसी को मत बता देना की क्या-क्या छोड़ आए हैं ।

ग़ज़ल ये नमुकम्मल ही रहेगी उम्र भर "राणा"
के हम सरहद के पीछे इसका मक़्ता छोड़ आये है।

हिंदू शब्द को राजनैतिक समूह का वाचक बनाया जा रहा है !

राजीव रंजन चतुर्वेदी

यों मेरुतन्त्र तथा अवेस्ता इत्यादि में हिन्दू शब्द का क्वचित्प्रयोग अवश्य मिल जाता है किन्तु भारत के प्राचीन साहित्य में जितनी बार आर्य शब्द का प्रयोग हुआ है ,सनातन शब्द का प्रयोग हुआ है , ब्राह्मण शब्द का प्रयोग हुआ है , भारत और भारती शब्द का प्रयोग हुआ है ,वैदिक , बौद्ध , जैन , वैष्णव , भागवत , शाक्त , शैव आदि शब्दों के प्रयोग हुए हैं उसकी तुलना में हिन्दू शब्द कहाँ मिलता है ? भले ही आप हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति इन्दु शब्द से मानें अथवा सिन्धु शब्द से !

हाँ, अमीरखुसरो ने हिन्द, हिन्दवी आदि शब्दों के प्रयोग किये हैं ! कबीर इत्यादि सन्तों की वाणी में हिन्दू -तुरुक आदि शब्द बार-बार आये हैं । हिन्दू और तुरुक के बीच एक भेदक रेखा दिख जाती है ! किन्तु तुलसीदास ने मानस में इस शब्द का प्रयोग नहीं किया ! आदि शंकराचार्य, आचार्य रामानुज, महाप्रभु वल्लभ, महाप्रभु चैतन्य आदि आचार्यों ने भी इस शब्द का प्रयोग नहीं किया !

स्वामी विवेकानन्द ने 12 नवंबर 1897 को लाहौर के अपने भाषण में स्पष्ट किया था कि हिन्दू शब्द से हम लोगों का वही अभिप्राय है जो वास्तव में वेदान्ती का है !

अब यदि हिन्दू शब्द का अर्थ वेदान्ती मान लें तो ऐसे करोड़ों लोग इस शब्द की अर्थ-परिधि से बाहर हो जायेंगे , जो वेदान्त को स्वीकार नहीं करते ! अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम की भेदक रेखा को और अधिक गहरा करने के लिए इस शब्द का राजनैतिक इस्तेमाल किया ! हालाँकि महामना मालवीय और महात्मागांधी जैसे मनीषियों ने हिन्दू शब्द की उतनी व्यापक परिभाषा की , जिसमें भारत की आस्तिक-नास्तिक सभी सांस्कृतिक-धाराओं का समावेश हो जाता है ।

सुप्रीमकोर्ट ने भी माना कि हिन्दू शब्द किसी धर्म का वाचक न होकर जीवनशैली का वाचक है !

लेकिन कुछ लोग आजकल हिन्दू शब्द को लेकर बहुत सयाने बन गये हैं। इस प्रकार से पूछते हैं , जैसे वे हिन्दू शब्द के सर्वाधिकारी हों, वह हिन्दू कैसे हो गया ?

अब तुम्हीं बतलाओ कि वह हिन्दू कैसे नहीं हुआ ? क्यों नहीं हुआ ? कैसे होगा ?

फिर तुम ही हिन्दू शब्द के सर्वाधिकारी कैसे बन गये ? इस शब्द पर किसी का पेटेंट या कापीराइट तो है नहीं !

हिन्दू शब्द का अर्थविस्तार इतना व्यापक है कि वह किसी एक नहीं , एक हजार संगठनों में भी नहीं समा सकेगा !

वे हिन्दू शब्द की क्या परिभाषा करते हैं , यह तो वे ही जानें !

यह देश इतना विशाल है ,यहाँ इतनी बोलियाँ और भाषाएं हैं कि उनको जाने बिना ,यहाँ की सांस्कृतिक-धाराओं की पहचान भी नहीं हो सकती ! वे सभी सांस्कृतिक-धाराएं यदि हिन्दू नहीं हैं ,तो क्या हैं ?

कहीं ऐसा तो नहीं कि हिन्दू शब्द को राजनैतिक-समूह का वाचक बनाया जा रहा है ?

हिन्दू-वोट ! हिन्दू-वोट !

क्या हिन्दू किसी वोटरसमूह का नाम है ? क्या हिन्दू आदमी नहीं , वोट है ?

भारत की समष्टिचेतना , सर्वजनचेतना इसे कैसे स्वीकार करेगी ?

काला धन - सफ़ेद धन

मुल्ला नसरुद्दीन बकरे का एक किलो माँस ख़रीदकर लाये। बेगम को राँधने को दिया, और ख़ुद थोड़ा मूड बनाने के लिए बाज़ार की ओर चल दिये।

बेगम ने देसी घी में ख़ूब मसाले डाल-वालकर स्वादिष्ट मीट बनाया। अपने मियाँ के इंतज़ार में बोर होते बेगम नमक-मिर्च चेक करने के चक्कर में धीरे-धीरे सारा मीट ख़ुद ही खा भी गयीं।

अब मुल्ला जी आये तो उनके सामने खाली पतीला रख के बोलीं कि जी, मीट तो सारा ये बिल्ली खा गई!

मुल्ला जी ने बिल्ली को पकड़ लिया। तराजू में रख दिया और जब वह तुलाई में निकली पूरे एक किलो की तो परेशान होके कहने लगे, "बेगम साहिबा, अगर ये बिल्ली है तो मीट कहाँ है और अगर ये मीट है तो बिल्ली कहाँ है?!!"

तो, अगर रिज़र्व बैंक की तिजोरी में आया सारा पैसा सफ़ेद है तो काला धन कहाँ है, और वह काला धन ही है तो देश की जनता का सफ़ेद धन कहाँ चला गया ?!!

प्रदीप कासनी

बच्चो स्वयं से सीखें

बच्चो स्वयं से सीख कर जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। स्वयं से सीखना अर्थात स्वयं की पहचान करना हमारी स्वयं की एक अद्भुत आंतरिक शक्ति होती है जिसके बल पर हम अनेक ऐसे कार्य कर लेते हैं जो न केवल आश्चर्यजनक होते हैं बल्कि अकल्पनीय होते हैं। प्राय: हम अपने जीवन का अधिकतम समय बाह्य संसार को समझने में व्यतीत करते हैं। अपनी शक्ति को ज़्यादातर नकारात्मक कार्यों में ही व्यय करते हैं। यदि हम स्वयं की पहचान करें, अपनी प्रकृति को समझें व अपनी शक्ति का सदुपयोग करें तो यही हमारे जीवन की सफलता की कुंजी होगी। अपनी शक्ति को पहचानना व उसका सुदपयोग हमें केवल स्वाध्याय के द्वारा ही प्राप्त होता है। स्वाध्याय हमारे लिए एक ऐसा शस्त्र है जो हमें आंतरिक रूप से सुदृढ़ बनाता है।

जिस प्रकार बाह्य संसार में सफल होने के लिए हमें मशीनों व तकनीकी उपकरणों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार बच्चों की आंतरिक सफलता के लिए दिनचर्या के नियम, स्वाध्याय व चरित्र निर्माण भी अहम भूमिका निभाते हैं। जब हम बाह्य समस्याओं का सामना करते हैं व उनका समाधान करते हैं तो हमारा मनोबल बढ़ता है, उसी प्रकार दिनचर्या, स्वाध्याय (आत्मचिंतन) का अभ्यास करने से आत्मिक बल भी बढ़ता है। इसी का पालन करने से हम शांतिपूर्ण, निर्भीक, प्रगतिशील एवं स्वस्थ समाज का निर्माण करने में सहायक होंगे।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल